

2665

图 2-2-10 无

नमः
२

हनं पूर्वदीपया प्रमान गथ धालसा चादाला न विस्तार अर्द्धव दाला वादा ॥ ११ ॥ अगुली दीपस अंपसिमा कृमाद स
चाड अंसिमाया प्रमाद्य भनक्ति या न यडाडा पया न दधु डाडा न न कृ स चाड थयिगुदीपस चाड सत्यया महाओ
नदयाड चा न रुली ॥ १२ ॥ हनं उरु न दीपया प्रमाद्य गथ धालसा डिमनि दाला न विस्तार याड चाड पकोनवान ॥ १३ ॥
या न न हस्ते विस्तार भ कृ पा धि च ॥ अर्द्ध श्रं द कृ ति सो मय र्व पूर्व रु लानि च ॥ ११ ॥ न सिंदी पम हा वृ ड अ
मनामा व निष्ठति ॥ या न नानां भनं सुंग वक्तु ना च द्वि या न न ॥ पंचां भ या न न य व भा पा य न रु लानि च ॥ १२ ॥ दभ
या न न हा हस्ते नृ न कृ न रु व न ॥ माह धु म धु ला का ना वि भा गी य म य ड या न ॥ १३ ॥ न गु ना म म हा वृ ड क दं वा
आ व निष्ठति ॥ या न न भ न मूर्द्ध गं विस्तार श्रु या न न ॥ १४ ॥ रु व द्दी त नी धि यो न न भा पा य न रु लो द य ॥
विपक्ष भ या न नानि च ॥ १५ ॥ न व या न न स हा स्ते य श्रि म म धु ला कृ ति ॥ नाना य न लो ज नी य क भ कृ च न

अदीपस कदं वर सिमाद स चाड अंसिमाया प्रमाद्य गथ धालसा भनक्ति या न न विस्तार वाडा स चाड पया न दधु ॥ १४ ॥
डाडा न न कृ स चाड थयि विस्तार या स चाड अदीपस वास या क लो क स म स महा धना थ न न रु लो ॥ १५ ॥ हनं अ
पत्र लो ज व ति य श्रि म स गु द न न विस्तार वदु ना का न या ड चाड ॥ १६ ॥ श्री व द स त्या य न म ॥ ॥ ॥

२

ध्यामध्यास पितृपतिमा च्छमादसंवाह ध्यामनाया प्रमादा गथा ध्यालसा भगवन्ध्यामना विस्तर चोडासंवाह ध्यामना ध्यामना या
दधु डाडाडेन कीमास्य चोह ध्यादीपस चोह लो कसमस्यो सरव मपा किरुल रुल ॥ ७ ॥ ध्यात चतुदीपयाम ध्यास समग्र ध्याः
पर्वतया चय दाल योऊन रनेलो डी चोह रुलो ध्यायस सफरल संशक रुल के के तल ध्यालसा भल किलि पूरष मी च
क्र रव रु मधि यथि गुसमग्र पर्वत महा लो रायमान रु स्थि चोह ॥ ८ ॥ चय दाल योऊन चोडा डी काहा डी ह ध्यात प्रमा स रुल

प्रडी नाम महा वृडः तस्मिन् वा वनिष्ठ नि ॥ ध्याऊन भूत मूढा या वद योऊन विस्तर ॥ ७ ॥ नसां चोडी तिसहस्रे यो
ऊना नां तुम ध्याक ॥ सफर म ध्यामग्र न गना मधि पथेनः ॥ ८ ॥ चतुत्राणी तिसहस्रे त्रव ग का लि ता मधि ॥ ध्या
ऊना नां सम च्याय ते ये वन पली रुम ॥ ९ ॥ ऊन चोदी पाह वाम र्वा र वसा दा भगवत्पूष ॥ मनुष्या ना धिका ना जान नि

हनं ध्यामग्र पर्वत या ताडा या भा र्वा या हं चोह के के पर्वत ध्यालसा निमिध यूग धन धा धन खदिन सद भन विनी ना क र्ध
कांचन लोतना ध्यात नाम सफ पर्वत ध्याय ध्या प्रमान गथा ध्यालसा धिय नि योऊन चोडा स्य चोह नेलो डी चोह थलिं थथि गू
पर्वत ताडा समग्र या हा र्वा लो क र वनं सम स थु कि सं तु रु लो श्रीरु गवान आदिनें सम स देव लोक थु कि स कु वाः
सया हं वि का क रु लो ध्यामना मूड न्य ध्यामग्र पर्वत या चास श्री वड सत्वरु ग स सा ग या गु न् थु क सं तु विष्ठा क रु लो ॥ १० ॥

नमः
३

धनं च उदीपय स वसुतपं चाह मनूष्य लोकाया आयु प्रमादा गथय कलसा ऊं वदीपय स वसुतपं चाह मनूष्य लोकाया आयु प्रमादा भन
द्विद हली थडा रस कर्मन क कर्मनः ध क न्याय द न ॥ २० ॥ पूर्व कलया मनूष्य या आयु प्रमादा सत्याद पतिमान उरुन क
लया मनूष्य या आयु प्रमादा दाल द्विद हली ॥ २१ ॥ अथ अयत गजवती स चाह मनूष्य या आयु प्रमादा ५०० इ स ल द थडा
स कर्मन क कर्मनया दलन ध की न्याय द न ॥ २२ ॥ हन ना गया आयु प्रमादा गथय कलसा कल्य द्वि प्रमादा आयु र

यता यष सदा ॥ २० ॥ पूर्व दिद ह काम र्ण्य सार्द्ध वर्ष भगा यषः ॥ उरुन कलवा वर्ष स ह म्ना य उरुन स ॥ २१ ॥
नथ पण गजवती या य की वर्ष भगा यषः ॥ नगा पाया क्लि नाना स जी विवा यष मिनि ॥ २२ ॥ कल्य स्या न्ना नया
ना मिल भूमि पिक लय कः ॥ दभ वर्ष स ह म्ना य की प्रमाना नृ प स रुमः ॥ स्व स्व कर्म वसा कल्य नियता यष व नीतिनाः ॥
२३ ॥ चतुर्द्विदीपिक मानां अधिप्राजा व स मिहि ॥ धन नाका विरूपा ऊ विरुध की न ना धिपः ॥ २४ ॥ नल म क ति न स न्वा
युध व धिप्राय ना का भग्न य प्रमादा सा विविध व रुष धा ॥ २५ ॥ (ल हनं निर्य ग्या निया आयु प्रमादा कल्य द्विद हली रुना

प्रत लोकाया आयु द्विदाल प्रमादा रुल धमि सत्त कर्म या व सान ध की न्याय द न ॥ २३ ॥ उदीपया प्राजा सूर्य निधाल
हा द द्विद हा वदीपया विरुध क ताजा पूर्व दिभा या धन नाका विरूपा ऊ विरुध की न ना धिपः ॥ २४ ॥ नल म क ति न स न्वा
सदिगा या विरूपा ऊ ताजा ॥ २४ ॥ अथ न ना नल म क न पूया डी मे हा न रुखी आता य मान या ड चीठ अथ न ना जा या भगी

प्रमादा रुक उदीपया प्राजा सूर्य निधाल
महा न द्वि क भगी न रुल ॥ २५ ॥

अथालीला अष्टदीपयाप्रमाद्युमियादिगुहोक्तिसमद समदयादिगुहोक्तिसमिधनेक्रमन अष्टदीपनंवाक्याहं स
फलागननवाक्याहं रुद उमंवाह सफलागनगथवालसा डीनसमद मधसमद सतासमद द्युतसमद दधिसमद
चिसमद उलसमद धनेसफलागता २६ ॥ अतपथिमधुल धयमिचक्रवान महाचक्रवाउ पर्वतसकल्पधियापिडा
ह वागवशले धनेकणलाडीचाह वाफुनागशुल २७ ॥ गवनपूमनषया वीरु अंकलययंनं सत्वलीक उत्पत्तिः

अथपदीपक अष्टासफतिगधिरिवृता ॥ तथआनद्रुदवाअदधिकीगापयानके ॥ २६ ॥ चक्रवाउमहाचक्र
वाजयांनेयमावत ॥ अष्टदिगुतिगादीपा - दिगुतिगादिति ॥ २७ ॥ आवीडादकलयावत्ययनं वाधिमधु
प ॥ यमतीयमधुविविधं निलोकानाकथयाम्यह ॥ २८ ॥ नातापितादिसंयोगादेकुयतरुवडन्विन अति
निष्टगमानंदसुखमार्गप्रवणता ॥ २९ ॥ देनाशानिमधुवामदकिंघोयास्तथा वामंभुक्रविजानीयादकि
लोककर्मवचानयामीलनमकस्यधमधुवामवत ॥ ३० ॥ (रुल लोकार्थनयमादि अंतपर्यननंसम

समस्त कर्मकांडं हयशुलो ॥ २८ ॥ प्रथमस समुक्त लोकया उत्पत्ति याप्रमाद्यगथवालसा मामडा ववडी संया
गदुयाडी अतिजानन्दशुयाडी सुखनरुनइदितं के के इदितवालसा यानिघात्रयामधुयाडी खडीस निगुलि
नाडिवहलपूरवशानाडिनंभुक्रवीरुलडा डीनाडीनगलवीरुहाडी धनिगुलीवीरुनापलाडाडी धदुलवावत ॥ ३०

सम.
४

त्रकपाशुल्लया धनिकायामधिसमाहुमर्मा विद्रुपनचानिडा धनलिप्रथममासस. वीरुडा. हिडानापक्राडं तं
त्रविडं चानिडा. द्वितीयमासस. ग्वउरुय. अकागसियमडीडा ॥ ३१ ॥ तृतीयमासस. प्याचत्रयाहं चानिडा.
चतुर्थमासस. भयद. यिडा. धनं लिबोयडा. निलनयाडं मत्स्याकागशयडा ॥ ३२ ॥ पंचमासस. वीरु. ग्वउरुय. ष
डमासस. चक्र. आरु. घा. धि. का. मन. ध. आदिपंसकालयडा. सफममासस. के. अ. उत्पदि. रुयडा. ताम. चिमिस. घालं. चि
शुल्ल. आनि. त. म. म. वि. द्रु. प. न. नि. क. ति. ॥ प्रथमं कत्रताकागं अर्वदं च द्वितीयकं ॥ ३१ ॥ तृतीयं पणिना
गात. अ. तु. र्य. द. न. म. व. च. ॥ वायुनापूर्यमानस्य मत्स्याकागं तताहवता ॥ ३२ ॥ पंचमासं गतं वीरुं प. की. र्का. ट.
की. जा. य. ता. के. भ. त. म. न. खा. नि. क. स. फ. मा. स. न. जा. य. ते. ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ब्रह्मकुत्रि. त. थ. वे. थ. स. दा. श्रे. व. तु.
व. ध. डा. ॥ संस्कारं च तु या नां च सदा धां संस्कारहीनता ॥ ३५ ॥ मातापूषा वती मासि चतुर्थे हनि संश्रिता ॥
मिसलूय ॥ ३६ ॥ अष्टमासस. पंच. इं. द्रि. य. आ. दि. न. ड. नी. डा. ॥ नवमासस. संपूर्. ह. र्हा. डा. द. ष. मा. स. स. च. न. ना. द. या. डा.
रु. ना. का. य. रु. ल. ध. न. ग. र्त्त. स. द. ड. सं. सा. त. स. ड. न. उ. त्प. दि. रु. य. डा. ला. ॥ ३७ ॥ ब्रह्मकुत्रि. वे. थ. स. दा. थ. य. ना. डा. नि. स. स. दा. रु.
क. या. ग. र्त्त. सं. स्का. र. म. घ्वा. ल. ध. न. य. त. ष. ष. रु. क. या. ग. र्त्त. सं. स्का. र. मा. ल. ॥ ३४ ॥ ग्वनषू. मा. म. या. पू. षा. व. ती. रु. ल. डा. डा. प्य. ड. न. म. हा.

प्रायश्चित्तमालः धनंलिः श्रीपूत्रपया अमृतागदयादीः तथास उत्पत्तिरुयकागदशुलः ॥ ३६ ॥ अथ कलसाविधिमा
 हा धनंलिः त्रसविधिज्ञाया ॥ वाध्यावाडुकूकू कलभा चन चेत्यपूजा लखय स्नानयानकं धर्मदनकं काथारख
 नागमिद्रनया खालखयमद खतसा प्राचिरु अमंगल ॥ धनंलि यद्रुससगनविय नकिंम माल वनक डिमनिद्र
 धन कलभपूजा सूर्यपूजा पूत्रपनंलिद्र काय परिमानतिनशुल ॥ ॥ ॐ निलसविधि ॥ ॥ गवतलसगलवितिया
 भत्रीनसदयाडी चडया परिमान थथरु लो ॥ पिलनिम्याडं रुयानं घूलादल्य मालक कर्मशुलो ॥ गलवितिया स्नानरु

गलधनायदासादि कर्कवाश्च चतुःषडा ॥ षडकमाशिगीम नकोपत्रयादिकं ॥ ३७ ॥

नकर्मादिः लसिधन्य सिद्रूपपूजा चेत्यपूजा लखय धर्मदनक कलभा तिषकवियविधिथं षट्मासक्रियां थथं ३
 चालादयां थथं यद्रु कर्ममाला मनु ॥ ॐ त्रसस्नानथस्वाहा ॥ धनंलि डिलादले लादडया जानक केलभा चनपूजा
 चेत्यपूजा रीडा सोधनयाय ल ॥ य धर्मदनक रीडा लखय नके पची गसकाय ॥ ॥ ॐ प्राधायस्वाहा ॥ ॐ अणायस्वा
 हा ॥ ॐ समाधायस्वाहा ॥ ॐ उदाधायस्वाहा ॥ ॐ वानायस्वाहा ॥ ॥ अचमन ॥ ॥ हनंठापचिनं ॥ ॥ ॐ नागयस्वाहा ॥ ॐ कूक
 मयस्वाहा ॥ ॐ रुकेगायस्वाहा ॥ ॐ देवदकायस्वाहा ॥ ॐ नंजयायस्वाहा ॥ ॥ ॐ कानके समयचात्र कलं खकीय ॥ ॐ न्ति श्रीमानविधि ॥

प्रसन्नमिहारां गलकाशानि नरुलसिधयः ॥ तन्मया तन्मला र वाया वला र अ नया चेला र अ नया अ नला र य
 थ कं थ रु ली ॥ ॥ थ नं लि रु ल प्रसन्नविधि थं ॥ थ यालिङी ग्रह तडा विधि ॥ ॥ थ क अर्थ तृ गू वहा कू दमी
 चकी सि य न क सी रा रु ल रु ण मा सि न ह ल थं सि रु डी ह थ त घा डा डी का वा य कं ग्रह भा मि रु यू थ नं लि अ न प्र
 सन्न ॥ १ ॥ कं थ ॥ थ न या ड कं थ थ य ॥ ॥ थ न चू ग क र्म स फ व र्च अथ वा डि नि द स रु ली ॥ ॥ नि व र न मा ड डी ॥ थ न
 अथ ग्रह तडा ॥ ॥ आ दि द्य त क पा षा षः व चः सा म स थ व च ॥ क र्म तं ग त कं द यं श्री य स वं ध म व च ॥ य न
 नि गु तृ वि द्या या शु क्ल या नि षा मि स थ ॥ लो हं भ नि शु त र ह्मि या त रा च ह वी ड कं ता म्भ कं ती श्र वि ह्मि या रु न मा
 य न्नि स र ॥ १ ॥ ग मा ग्र ह डी उ वा ला नां हि न रु त वा ॥ १ ॥ ॥ क वं भ प्र का वं द रु न ना च प्र का य त ॥ प्र व
 आ ग्र ह धा रि रु पू न ता वृ थ व रु ध क ॥ २ ॥ अथ लो का चा त्र प्र व डी मि स त्वा नां हि न रु त वा य न स च र न
 लिङी वू षा थ रु ली ॥ ॥ अथ लो का चा त्रे मा ह ॥ ॥ व ल ना ॥ क वं भ या क ल स रु न रु लं डी लो ना म नू षा वं य
 थ य प्र व आ व न ग्र ह धा त डा डी रि रु धा य रि रु रु स लि रि रु क र्म ताल ता डी व रु य ध रु त्व ला क स रु रु मः
 श्री व डी वा र्थ थ य रि रु ताल ता डी ची ठ स ॥ म न ल क थ य ॥ म न ल क ताल ता डी ची ठ स चेल क थ य थ न
 वी ध थ य ॥ २ ॥ थ नं लि लो का चा त्र व रु न क्ता य व स म नू षा न थ न प रि मा नं च त ल प ल डी क्ता या ॥ ॥ ह लो क स प रि

पतलोकमकिशयथका ३ =

भम
६

सुथद्रापादहाडीथडांरुददेवतायायोगरूपयायनाभध्यानादिस्तुत्याय॥ ४ ॥ अनलिदभनपिनखल
डानकीभक्तिप्रमाणनडानेमरुतसाध्यावक्तिभननमरुतसादभनपिनचननडाभामाललखइथु
सहली॥ ५ ॥ गथधलसाजातियाजातियास्वरूपनभुवियायजातचाकायवध्तिदहली॥ ६ ॥ ब्रजाचार्य
प्रागनकायसहातितापूर्वमुखंपून॥ लाधिवदतयागनरूपकीपुंसमाचगत॥ ७ ॥ ततादभगविनाभ
नतागलावहिजडते॥ काभभकंनदईकनागादहिरुलाभय॥ ८ ॥ ग्रहधंवध्तिदेनमृत्तिकादंतका
हक॥ अज्ञानकंतथपीतंकुसुसंशुद्धरुमिष॥ ९ ॥ ब्रह्मकुवियवेध्यानांभूदासांचतखेवच॥ नदीदेवाः
लयचेमभमानइष्टरुमिष॥ १० ॥ नदीदेवालथचेमइष्टरुमिष॥ नकार्यमृत्तिकातनुविभाषासगकर्म
क॥ ११ ॥ लावृष्टतसपूजुषप्रतिष्ठाभममधुप॥ नकर्तुवाप्रयत्ननषत्रधासंगकर्मक॥ १२ ॥
र्यशकस्तुत्यचाऊगियाझाउचावेध्यामासूचाभूदयाहाकचाकाय॥ १३ ॥ गथधलसाचाकायथायषसि
संदेवालथसमीपसंवहिलिसंवाहालसंभमानरुमिसंमलमृगुरुमिसंथुनल्लानसचाकायमः
नडी॥ १४ ॥ मलमृगुगयायसाग्यसंरुसदसंनलिदसंलवातसंरुल्यसंमधुपसंमलमृगुगया

=
२
गयायमरुत॥

धनं लिदं तं धवन यद्गुसरा कसि विषय इह कसि खदिगसि आदिनंद कसि कायाऽऽ वयम तडा कालानं म तडा
लानं म तडा दथूलानं म तडा अंगुलानं म तडा अणुमार्ग कदम्ब कयाडा द न धवन याय अरावे द न काष्ठ म द गसा कस
पाल मूढु चोत्प धनं तु तडा ॥ १० ॥ गथ धालसा मल मू गुग्या गयाय यतिमान रुधो ज्ञान याहुं कखाय मशुल सां

यलाग डी न वृत्तं च खदिग म्रवतार्क कं ॥ अणुमार्ग कदम्ब श्रीगुड्डी यादं न धवनं ॥ १० ॥ रुधो संधा तय रूमी
चीवने निगमा वहत ॥ ११ ॥ अथवा सूर्योदय च पूर्व सांम
थाक्षव उर्ध्वमुखं ॥ संधे निभा काले दडि निमखं विदुः ॥ १२ ॥ पिथा ये मल मू गुं च शुत डे सुमा वडुत ॥ प्रथमं
डल लोच्ये च द्वितीयं मृत्तिका शुचि ॥ १३ ॥ प्रकालय - - न्निषं यावद् धनं वर्तते ॥ यथा पात तथालिं गहसु
प्रकालनं पून ॥ १४ ॥

माउस गानं पूयाडा गान मडम स्पं वरी गान दिभा खयाडा मल मू गुग्या गयाय रु
ल ॥ ११ ॥ अथवा विषय न सथ क्ता या वरी गान स्वय सूर्य उदय रु स्पं लि पूर्व स्वय बाक्षिस उर्ध्व स्वय संधा का
ल स गणिस दडि नि स्वय रुल ॥ १२ ॥ प्रथम स लं खनं शुचियाय चानं व स्पं शुचियाय रुत सा नीय रू क्काल म
रुत सा गल लवन द न डाल त चानं व यानं शुचियाय रुला ॥ १३ ॥ लोकि कया शुचियाय रुत गथ प्रमान धाल सा खपाल

॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

नमः

७

शुचिप्राप्तमात्रगथाधालसा गुरुक्या चेलक्या विष्णुषटशुली आसलत्रयाधयादुगनकिरिद्रया स्वशानकिमात
धनेप्रमादोशुली ॥ १५ ॥ आचमनप्रमात्रगथाधालसा आसा तीर्थधाय लाहागियाइलासहली नखाग्रनअचनयातसा
मृगडादुलधाय धनेन नखाग्रन आचमनमनोशुली ॥ १६ ॥ गथाधालसा-रिद्रया ध्यानस्तान आसनलक्यामनुला

होचमवंगुरुक्यानांचेलक्यानांविष्णुषटशुली आसनलक्यारिद्रयांदिगुहांतिगुहांरवेत ॥ १५ ॥ आचम्यमास
तीर्थधुवीतवर्गिनित्यक नखाग्रधायदाचम्य अक्षमयानदुल्यगा ॥ १६ ॥ ततोस्तानविधिमाह ध्यान
स्तानंचरिद्रयांमनुचै आसलक्या चेलक्यानांरुलस्तानं ब्राह्मणादिविष्णुषटशुली ॥ १७ ॥ नवकिडमल
लिफंदर्गधमलसंशुचि ॥ स्तानवशुच्यनेदेहंनसास्तानंदुसर्वदा ॥ १८ ॥ प्रथममलस्तानंचमलस्तानं
नंदितीयकं ॥ ध्यानस्तानंदुतीयकं ॥ तत्पश्चाद्रुलदानकं ॥ १९ ॥ श्रीवक्रसत्वाय नमः ॥

नचेलक्यारुलस्तानवक्रधादियांरुलस्तानविष्णुषटशुली ॥ २० ॥ मनूष्यपानिसमस्तयानवकिडसतीतसदश
थसदगन्धिपाषमलनंलिफपंचीठथथिठ अषविगुणतीत वक्रकनंशुद्धरुय धनेनितिकिनंस्तानयाहा
नंयविगुरुली धनेनवक्रमनूष्यनस्तानयायमाल स्तानकंय प्रथमसमलस्तान धनेनलिसंशुस्तान ध्यानस्तान धनेन

॥ २१ ॥

अनेकालाभावन ६

प्रथमः चित्रलया नमस्तुत्कारः अर्चलिसमस्तदेवतायाः नमस्तुत्कारायः ग्वलनाधालसा नियच्छुद्धतस्मानयाय इत्यादि ॥ २० ॥
 लंखणाधनयायामनु ॥ २१ ॥ स्नानयायामगथिं च नदीसः नदीसमहारनदीसंतोडा नदिच्छुद्धादि वक्रालयमहातीर्थलंकां
 नदी इत्यादि ॥ २२ ॥ गुप्तेनमज्जदिषदपाडा नमस्तुत्काराय ॥ २३ ॥ अथशुद्धिश्चतुषदपाडा स्नानयाय ॥ २४ ॥ अथतप

[illegible]

नमः
८

धनं कुलरावनायाया ॥ हं गंगदवि कुलपीलसन त्रिभगीतयविगुयायमाल गाधिं गव कुलपीलधलसा समस्त देवलीक
नं पङ्कलपंगयास्र हन गधर्वनं असुरगनं पङ्कलयंतयास्र कुलपीलसन सर्वदा कालं प्राप्तित्र उयायमाल ॥ २८ ॥
समसिन वीन कुलपीलयानाम गंगश्रधकं कुलीकं प्रख्यांतियाहं विष्ठाक हनं चतुस्रसमदसंलीनयाहं विष्ठाक सम
स्तप्राप्तिनं प्रसंसायाकस्र कुलपीलशल ॥ २९ ॥ हं गंगदवी कुलपीलसन त्रिपनिपविगुयाहन समस्त सत्वली

अथ कुलरावना ॥ ॐ परं त्रितासर्वदेवे स्तंगधर्वास्रतकिन्नरेः ॥ पावनं क्रीयतां देवी सर्वतरुमानि सर्वदा ॥ २८ ॥
नवास्ति धनगंगानि उच्यते त्वनं गुरय ॥ चतुर्गोदधिगमनी च सर्वतरुनेन सर्वदा ॥ २९ ॥ अथामासर्वत
तानां सर्वलोकनिवाशिनी ॥ इमनी त्वमसी श्रीचक्रप्रदविपावनं ॥ ३० ॥ अष्टिहितिहिकर्तृत्वं उग
ल्लावत्र जंगमं ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कर्तृप्रदविपावनं ॥ ३१ ॥ स्फुटिकवयकतंदनसर्वतरुनेन सर्वदा ॥

कया प्राप्तिपनि वास हनं समस्तयां नाम कुलपीलधकं ॥ ३० ॥ हं गंगदवि समस्तया अष्टिहितिहिकर्तृत्वं कुलपील उग
नं संसात्रया थावत्र जंगमं कुलपीलधनं कुलपीलसन त्रिपनिभगीतयविगुयायमाल ॥ ३१ ॥ हं गंगदवीः
समस्तलोकनं सदा सर्वकालं निर्मलभगीतयवययाहं विष्ठाक गवनषू कुलपीलया धनयानाम हनं संसात्रवायाहं

३२ ॥
पनिस्त्वलायद्रुलो ॥

हमं कुलपोलयात्रय सदाकालं लेखरूपनं विष्ठाक थथिं म कुलपोलसेन समसुलोयात सुखवियमा लधकं डिगरीत्रयवि
न्यायमाला ॥ ३३ ॥ अथ लिखाना ॥ हंगंगदवि कुलपोल यावर्ध कर्पत्रयाथां गवर्ध हनं दोहलखानयाथां गुवर्ध यकाला
हानधननपाडी विष्ठाक स्वगउमिखायाडं यमासनयाडं विष्ठाकलाहातिस के के वसूक धलसा उडी कालाहातिस उत्प
लठठं विष्ठाक निकालाहातिस अत्यमूडा उयमाला सहितनं ठठं विष्ठाक खडीला हातिस स्वधुंकलसठठं विष्ठाक

निर्यं त्वं कुलरूपन उगकावग उंगमा ॥ कीयतां पावनं देवि सर्वलोक सुखप्रदा ॥ ३३ ॥ अथ ध्यान ॥ सव वी सन
मग्न त्रिही मरुयदा श्रीचाठनाला रुमा वामेय सुक धतिही चस घटां कर्पत्र कधुठला ॥ यधायनि चतुर्दं
निनयनां पमासन स्ववगां लां देवि सर्वलोक निवाभिनसुषां भुचिल्लं कर ॥ ३४ ॥ सकल कलूरवयं के इष्ट
अथतिमगा यदि तव भग्री त वेलासत देवदेवी ॥ अखिलमल विमका निमलं वासि रूखा पत्रातिमलियातिश्रा

थथलाहातिस पसूक ठठं विष्ठाक थथिं म कुलपोलसं संसात भुचियाकरुल कुलपोल धकं अतन वतित्रिक नंभवम
॥ ३४ ॥ हनं कुलसां समसुलो कया पापया भग्री त याडं चाठ थथिं पाप भग्री त कुलपोल या के लूक विनामा नन पापस
मरुना भइल निर्मल भग्री त रुयाडा यवि नुयायमालरुल ॥ अतलवनायाडा स्नानयायमाल अतवाक्क पलपाडी ॥ ३५ ॥

नमः
२

समस्त व्याधिनाशदिपायः शत्रिदः दुःखः पूर्वकृतमसया हापापः कृद्विमुहाडा चोठः धनेपापमोचकया तः ॐ हलोकसः युक्ति
नल्लानयायः अल्लानयाडापूष्यनः अनूरुतः कललातधकं ॥ ॐ कातपदकृतिविश्वरूपनिर्मलरुसंशुगुशली ॥ धने
याकेनल्लानयायः कृपीलनेडाः स्वपीलनेडाः हापीलनेडाः कसपीलनेडाः कृली ॥ धनिल्लान ॥ ३६ ॥ धनेपदपाडा

व्याधिनिरागदग्निदरावातिः ॥ अषपापकृतमलोका निःशयाः पूर्ववृत्तनीषूकानियानिरुनक्षयष - - संचि
तानि ॥ सर्वाधपिमानि ॥ हे वतानि पापमुनागानि न कानि ल्लाना यपूष्ये श्रुतानि तानिः अनूरुतः धनेचतु
सर्वरुता ॥ ॐ विमलशुद्धे ॥ ३६ ॥ धनिल्लान ॥ ॐ सर्वतथागतवाधिसत्त्वयति ॥ शुद्धस्वलावत्तन
शुद्धपूतयदं ॥ ३७ ॥ अपविशुवा - - सर्वदेतागतापिवा ॥ वस्तुदयसर्ववस्तुनिसदसुवतुपावनं ॥ ३८ ॥
आचमनः ॥ ॐ आरुं श्रीमन्वदसत्त्वगुर्वतचत्रशकमलायनमः ॥ ३९ ॥ कृतदान ॥ ॐ वृद्धाय नमः स्वाहा ॥ धर्माय ॥ संया
य ॥ आर्यविलाकिनेश्वय ॥ सूर्याय ॥ नवग्रहस्य ॥ देवगलस्य ॥ मनस्य ॥ गलस्य ॥ असुरगलस्य ॥ नागगलस्य ॥ नात्रकीग
लस्य ॥ निर्यकगलस्य ॥ प्रेतगलस्य ॥ पिभचगलस्य ॥ पितृलोकस्य ॥ मातृगलस्य ॥ स्वाहा ॥ ४० ॥ स्वाहा ॥

नमहास्वा

चचाय ॥ ४१ ॥ समस्तवस्तुकपविशुद्धयुद्धावस्तु आदिनश्ववाक्यत्रयाडाः पविशुद्धली ॥ धनिल्लः स्वयूवस्तुकयाडाः धडा
गिनचियः पूर्वस्वयाडाः कृतदानयाय ॥ ४२ ॥ चचाय ॥ धनिल्लिवाकनं जंरव न नश्वयालिडी न्यासयाय ॥ ४३ ॥

[illegible]

अथ न्यास ॥ ॐ आ ईं स्वरावमुद्रासर्वधर्माद्यादिः ॥ अदिति सर्वसत्त्वोद्धतलहताङ्गीकात्रेणामायपावलाकध्वजमात्म
नंतावयत् ॥ दक्षिणहस्त आकात्रेण सूर्यमधुलं ॥ क्रूं मां क्रूं खं क्रूं ॥ वामहस्त आकात्रेण चन्द्रमधुलं ॥ लो मां पां नां
वं ॥ ४० ॥ वृत्तिकनलाधना ॥ ॐ रुयाय हुं । ॐ विरूयाय हुं । ॐ रुय विरूयाय हुं । ॐ स्वावत्रदाय हुं । ॐ अरुय
प्रदाय स्वाहा ॥ वृत्तिदाहिनाहस्त ॥ अथ वामहस्त ॥ ॐ मेणीय हुं । ॐ दितिगर्त हुं । ॐ वरूपाय हुं । ॐ खगर्त हुं । ॐ
लोकध्वज हुं । ॐ मंरूपाय हुं । ॐ सर्वदीवर्त विष्मि हुं । ॐ समनरुद हुं ॥ वृत्तिजगन्नाथ ॥ ४१ ॥ अथ
हो ॥ असद्वर्गनिकाले इः स्वप्नमेयममृतं ॥ तीर्थमृत्तिकेपर्वतन्यत्नानमाचरेत् ॥ ४२

शिरसा कथस हृदय नालिस पादद्वयस धनरुद्रानां रविकानां शिरसा त्वद्द्वया कर्णद्वया घ्रातद्वया शिखासा मन पादद्व
या सर्वंगसा ॥ ४१ ॥ धनं नगसा ॥ ॥ धनलिकानुसक्तवती ॥ धनं लिख्य ॥ निष्पन्नानयायमरुतसा धनं लोत्पद्द्वया
य गथ्य धालसा ग्रसस इ स्वप्नरुत्य मेधनया ल्य तीर्थनाखलालो नैमिक्तिकदले पर्वदिने स्नानयायमाल ॥ ४२ ॥

नमः
१०

नित्यस्तनयानादुल्लेखे कालसा जन्मरुतसिद्धिरुल्लेखे तन्धुसिद्धिस्तानडाशो वाधिमधुपयर्थकं प्राप्नुयुः शूलो ध
नममनूष्यलोकननित्यस्तनययमाला ॥ ४३ ॥ नित्यस्तनविधि ॥ अथ नित्यस्तनार्चनयाय रूपां तं कीदृशामलाः
त्वत्पदितालातडाशजधिकात्रया कर्मया तसां ग्वलितया तडाशलिप्ति प्रायनरुल्लेखे यडाशुला ॥ ४४ ॥ अथ नित्यस्तनार्चन ॥
अथ तादृशविधि ॥ तिरुत्ताकया तादृशजन्मद्यति ७ क्रसंक्रामाल सामान्यया समस्तलोकया तडाशजन्मयाय सूर्या ज्येष्ठमशुकां

अथ नित्यस्तनविधिनित्यं कर्ता तिस्रमहामति ॥ ४३ ॥ रुतमनिवद्धत्वं प्राप्य तयो धिमधुप ॥ ४३ ॥ नित्यस्तन ॥
अथ नित्यस्तनार्चन ॥ नित्यस्तनयत्कर्मः तत्सर्वं कात्रयस्तदा ॥ ननाधिकैयत्कर्म तत्तु क्रमिन्नरुल्लेखे तवेग ॥
॥ ४४ ॥ नित्यस्तनार्चन ॥ अथ तादृशविधिमाह ॥ पूर्वकिं तादृशं तिरुत्ताकया तडाशकयोगतः ॥ यतादृशः
जन्मसफसर्वधां विस्मृते ॥ ४५ ॥ सूर्यादंगतस्तीतप्रमर्गे निमित्तं दिनाः ॥ प्रमर्गादृशभादृश्यं
तादृशं निरुल्लेखं तवेग ॥ ४६ ॥ यद्वांगतस्तीतप्रमर्गे निमित्तं दिनाः ॥ प्रमर्गादृशभादृश्यं

कामाला ॥ ४५ ॥ सूर्यादिनाशस्यंति तादृशया तसां प्रमर्गादृशभादृश्यं तत्तु क्रमिन्नरुल्लेखे तवेग ॥ ४६ ॥ यद्वांगतस्तीतप्रमर्गे निमित्तं दिनाः ॥ प्रमर्गादृशभादृश्यं
मायाकसकीनातादृशयायमनेश प्रमादनं कर्तुं लमया स्य नलसा उपाधधयायमाल चैत्यपूजायायमाल यथानुति

॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥
॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥

लोकनपाययातलस लखनंचय वृक्षवकाचार्यया त्रिकाक्षचय उग्रियावर्तुलाकाल वेमा याचवृक्षस सुदया लखनंरु
कहाय ॥ ४८ ॥ महीहवस्तक अयूकवमुक सहितयाडाडा लाऊमतडा दालदडा लाऊनस दालकायोनय धललिपा
नलसा लामासडा दुल्ल लाऊनरुली ॥ ४९ ॥ वलिप्रमादागथ धालसा यवाप्रमानरुली धलिपयत्रपितली कयागमा

त्रिकाक्षवर्तुत्रंवेवचवृक्षप्रसिंचन ॥ तथात्रिकायवर्धतदनकृत्वा लाऊनलाऊन ॥ ४८ ॥ असंयूकान्नपा =
नंचसावयंचाणरुडं ॥ लाऊनाने चतंचेवनित्पं लामासरुडं ॥ ४९ ॥ वलिवल्पपहारं च अचमनायय्य
कपूनः पंचपूठकंचगृहीयाता अक्षमनत्रयीनन ॥ वका चक्षमनिष्ठा नग्रहदां वत्रपंचक ॥ प्रमासुता
नलंवाषं द्वितीय लामा रुतये ॥ अतिथिरुयं रुचुर्य वलिकर्मका ॥ ५० ॥ अथमनु ॥ उं प्रथमासुतन
त्रतीषं द्वितीय लामा रुतये ॥ अतिथिरुयः रुतीया रुचुर्य वलिकर्मका ॥ उं अकालमूरवसर्व धर्मां माधीस
नेत्वा हातमहायज्ञिनिः ॥ उं दवलिंगुद्रसर्व भक्तिकु ॥ उं आः रु रु द्याहा ॥ उं पिदुयः स्वयं ॥ ५१ ॥

लसामालकविय सस्र धालसा अमगानत्रयात रुवी लामायात रुवा अतिथियात रुवी ॥ उं ददव तायात पिदुली क
यात रुवी रुली ॥ ५० ॥ अथमनु ॥ यन आसगीर्थस लखनयाडा प्रदक्षिणायाड आचमनयाया ॥ ५१ ॥ अतिवलि विधि ॥

नमः ॥ धनं लिख्यं च प्राध्यायः कृष्णं ज्ञानं धनं लिख्यं च प्राध्यायः ॥ ५२ ॥ धनं लिख्यं च प्राध्यायः कृष्णं ज्ञानं धनं लिख्यं च प्राध्यायः ॥ ५३ ॥

लघान्नराज्यद्वयोपचयप्रधानम् ॥ अनामिकाप्राधवायुः सत्यज्जगत्सिद्धयम् ॥ ५२ ॥ समानं
 र्जनीहृयंकनिष्ठादानवायवः ॥ बानवायुश्चक्रवर्त्तयन्तं यन्त्रात्मकं ॥ समहंगुलिपुनः ॥ यन्त्रद्वयवायुप्र
 तास्यतां ॥ ५२ ॥ समहंगुलिपुनः पञ्चदशवायुप्रतास्यतां ॥ शिरोप्रीत्यदाक्रान्तं वहिर्ज्ञानकथाकन ॥
 ॥ ५३ ॥ उत्कृष्टं नहास्यचैवर्ज्यहोत्रनंप्रति ॥ दक्षिणदिभं नयन्तं नदिनं विदुमाननं ॥ ५४ ॥

समहगुंलिनः पून यदिहापालराग्यायः श्वतनदधवायू रुफिहलं लोअनयायः प्रमादोगथा धाल मोदसवता
लिआदिनं तयमनडाः पुलिनपाहाशयकं लाहामिनचूयाडाः लोअनयायमनडाः ककयभनमनडाः दडिहोलायं
मनडाः भददयकं मनडाः अन्नचिराय लोनकमाल लका हामिदेवता महारुफिहलं समसकलं प्रतपिषावा

दिनं नृपि ह य ॥ ५४ ॥

धनं लिखन्नाय धनकाशी मुखसूक्त धनकाशी सद्धर्मसूक्त पाठयत्त धर्मकथाठनः ॥ कच्छपुद्गलसंठनः
माला ॥ ॥ धनं लिखन्नाय धनकाशी मुखसूक्त धनकाशी सद्धर्मसूक्त पाठयत्त धर्मकथाठनः ॥ कच्छपुद्गलसंठनः
उलिवंदना धनधनकाशी पूर्वदूरातसंदनरुली ॥ यस्मिन्सिद्धिः ॥ कच्छपुद्गलसंठनः ॥ ५५ ॥ गवन्धनसिद्धिः ॥
प्रमादलोत्तमनिडाइली ॥ यथातुष्टिवायमाल गच्छ ॥ कच्छपुद्गलसंठनः ॥ ५६ ॥ उपवासनचंद्रमाल सति धनसूक्तनयायमाल

यावदस्तु कच्छपुद्गलसंठनः ॥ ५७ ॥ धनं लिखन्नाय धनकाशी मुखसूक्त धनकाशी सद्धर्मसूक्त पाठयत्त धर्मकथाठनः ॥ कच्छपुद्गलसंठनः
॥ ५८ ॥ प्रमादाद्यं यथैकं कर्मव्रतनियममिव च ॥ मासनामचतुष्पापदानं ॥
च उपवासने ॥ ५९ ॥ नित्यकर्मचक्षुःशुद्धिः ॥ यथातुष्टिवायमाल गच्छ ॥ कच्छपुद्गलसंठनः ॥ ६० ॥
उचितवतः ॥ ६१ ॥ कामक्रोधमदमश्मदमोत्रवपत्रिचयनः ॥ लानादिदानपाधनः वर्षकर्मप्रसूति

॥ ६२ ॥ हनं निष्कार्त्तनयायनिष्कार्त्तनयायमाल रुली ॥ धनं लिखन्नाय धनकाशी मुखसूक्त धनकाशी सद्धर्मसूक्त पाठयत्त धर्मकथाठनः ॥ कच्छपुद्गलसंठनः
॥ ६३ ॥ हनं निष्कार्त्तनयायनिष्कार्त्तनयायमाल रुली ॥ धनं लिखन्नाय धनकाशी मुखसूक्त धनकाशी सद्धर्मसूक्त पाठयत्त धर्मकथाठनः ॥ कच्छपुद्गलसंठनः
दक्षिणं लिखन्नाय धनकाशी मुखसूक्त धनकाशी सद्धर्मसूक्त पाठयत्त धर्मकथाठनः ॥ कच्छपुद्गलसंठनः ॥ ६४ ॥
तिष्ठन्माला कच्छपुद्गलसंठनः ॥ ६५ ॥ धनं लिखन्नाय धनकाशी मुखसूक्त धनकाशी सद्धर्मसूक्त पाठयत्त धर्मकथाठनः ॥ कच्छपुद्गलसंठनः

नमः
१२

लोकया अष्टविश्वककुं पदार्थरुतं मनुजं शुद्धिद्वयं लंखया शुद्धिरुतं सूर्यायाकिरं खयानं वासया शुद्धि तयान
हनं मरीठ वस्तु कखनीडा थियीडा हनं चियवस्तु कथियीडा हनं मल मनुया ककथियीडा श्रया पविगुयाय अत्त
मनयाय स्वपालं ठापीलं कसपीलं खालासिय मोउ पिय शुचिस्तान श्रतेन शुद्धिद्वयिडा ॥ ६० ॥ हनं यहु सविवार
अष्टविश्वक वस्तु सर्वमनुया कुन शुद्धते ॥ सूर्याचिस्पर्भनावापिरुमीधुत्वा रुतं शुचि ॥ ५९ ॥ अतिदुर्द
नस्य लंखुडा किदुपर्भना मल मनुवि सगर्वीरु खितं दर्भस्पर्भना ॥ ६० ॥ यहु विवाह याता यांतीत्यदिवा
लयेषु च ॥ दभ विद्वत्संग्रामि महालाक्ष्मण मरुके ॥ ६१ ॥ कामनः सर्वसंस्पर्भनिका कैरुखतावा
भुलि ककुटं डंकी महापातकि नं शुन ॥ ६२ ॥ मां सवित्री सता वित्री मृतस्या जवत्रपुनः ॥ सचेलस्तान
मावर्तुः पत्नी गव्येन शुद्धते ॥ ६३ ॥ गउमूक च यहु च तीर्थदिवा तथि केन ॥ सग्राश धर्मत्रय हं शुचिस्तानमा

स तीर्थसः देवालयसः यागासः संग्रामसः महालाक्ष्मणसः सतकसः त्रुखतासः चभुलः ककुटः वताहः न जायः सुलीनी स
नामडीठ श्रतेनाथियानं अतिरिन्नमत्वाल शुचिस्तानमा तुन मक पंचगव्यनं शुद्धिद्वयः ॥ हनं प्रसादन
थरिवस्तु कथियीडा सनानमा तुन शुद्धिद्वयः ॥ ६२ ॥ नायमालक्ष्मणसः यहु कार्यमासः देवातः एकलायसः संग्राम
सः धर्मत्रयसः आगहनसः श्रतेन शुचिस्तानमा यमा लइल ॥ ६३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मासिकयातिगुणं वि. मा. वा. वृ. या. डि. म. नि. दू. नं. गु. वि. वा. भा. व. न. क. डि. म. नि. दू. नं. गु. वि. वा. त. या. गु. वि. स्तान. मा. गु. नं. गु.
 वि. दू. या. या. व. म. ग. ल. नं. गु. वि. व. म. नं. ति. या. नं. गु. वि. श. ल. ॥ ६४ ॥ व. न. व. म. न. घ. या. इ. स्व. प्र. स. म. ति. इ. व. स. थि. ले.
 स. इ. प्र. क. र्म. स. खा. डा. स. मे. थ. नं. स. ल. ति. या. य. स. अ. डी. धि. श. ले. स. मा. वा. व. ल. स. थ. त. या. का. र्म. स. स्तान. या. य. म. ला. ॥ ६५ ॥
 त. नं. नि. श. गु. न. या. स. ह. नं. अ. गु. वि. मि. दू. न. या. थ. म. दे. डा. ला. स. म. च. त. ल. य. अ. गु. वि. द. डा. ड. ल. डा. स. गु. वि. श. ल. ॥ ६६ ॥ अ. ग्नि. स.
 मा. सि. क. या. ति. ग. गु. ध. श. ति. का. या. द. भा. ह. नि. ॥ ग. ड. ला. दा. द. ह. नं. गु. वि. स्तान. मा. मा. च. त. न. ॥ प. र्व. व. म. न. य. ति. य. म. गु. वि.
 व. म. न. च. प्रा. वृ. त. ॥ ६७ ॥ स. चे. वं. इ. स्व. प्र. इ. द. डा. उ. का. र्म. क. ल. मे. थ. न. ॥ अ. डी. धि. वृ. द. का. र्म. च. स्तान. म. वा. व. धी. य. त. ॥ ६८ ॥
 अ. गु. वि. द. म. ति. नि. यं. स. या. या. त. गु. वि. पू. मा. न. स. न. य. इ. ति. मा. सा. धि. गु. वि. र. व. न. त. स. ॥ ६९ ॥ द. ह. नं. उ. द. य. दा.
 पि. ध. व. ध. च. वि. का. र्म. नं. का. र्म. नं. म. शि. म. क्ति. च. प्र. वा. ल. ग. ड. त. प. त. ॥ ७० ॥ अं. ख. गो. य. न. गु. ध. नं. कां. धा. मा. म. न. च.
 दा. रु. या. य. न. स. र्व. ध. गु. वि. श. लं. अ. थ. वा. छे. द. न. या. न. नं. अ. थ. ॥ ७१ ॥ अ. ग्नि. अ. मि. अ. प्र. तं. वी. हि. सा. क. म. ल. क. ला. दि. वा. ॥ ७२ ॥
 वा. क. स. स. च. लानं. गु. वि. ह. नं. स. र्व. ध. या. मा. सि. क. या. म. कि. या. प्र. मा. न. द. डा. ॥ ७३ ॥ अ. त. या. अं. ख. लं. ख. त. हा. या. नं. सि. ला. नं.
 गु. वि. ह. नं. कं. ध. व. स. क. सि. ड. ल. व. स. क. थ. त. र. त. म. नं. वी. या. नं. गु. वि. श. ली. ॥ ७४ ॥ अ. ग्नि. अ. मि. अ. प्र. तं. वी. हि. सा. क. म. ल. क. ला. दि. वा. ॥ ७५ ॥

वि. श. ल. नं. अ. ग्नि. अ. मि. अ. प्र. तं. वी. हि. सा. क. म. ल. क. ला. दि. वा. ॥ ७६ ॥

ॐ हादमनामिनां स्वाहा ॥ ३

देवतानां ॥ ॐ आः ॥ ॐ मया ॥ कायादिनवग्रह ॥ ॐ वृक्षाय नमः ॥ ॐ वरुधाय नमः ॥ ॐ यशधराय नमः ॥
ॐ केशवाय नमः ॥ ॐ धृतराष्ट्राय नमः ॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥ ॐ केशवाय नमः ॥ ॐ
पंचदशग्रहाणां स्वाहा ॥ ॐ सर्वनक्षत्राणां स्वाहा ॥ ॐ सर्वविधात्मनां स्वाहा ॥ ॐ सर्वकलशधर्मनां स्वाहा ॥ ॐ सर्ववि
द्यैर्हृदयैः स्वाहा ॥ पृष्ठादिशोऽनमः ॥ दामः वक्रादिरुलमूलः ताम्बूनादि उपकात्रधनिर्जातन ॥ लाभादि
मृतिः कायः ॥ नैवेद्यवत्पूषहातादयः ॥ कोमात्री पूजनः ॥ थानादिवलि पूजन ॥ वक्रमृदिका सिंदूरतण्डुलानि
लाङ्गुलः नाभः कायः स्वस्तिवाक्यप्रतिष्ठा ॥ चतुर्थपूजा ॥ तदनूकन्याप्रवक्ष्ये ॥ देवतापूजनमधुलंपूतः स
नैवेद्यादि स्वस्ति कर्तव्यं ॥ स्वस्तिवाक्यप्रतिष्ठा ॥ तदनूकन्यायाभ्यां ग्रीवाधन ॥ निलाङ्गुलप्रोक्षणं वक्रा
दिविसर्जनः देवतादिप्रधामयश्च ॥ तवक्रादिसर्वलिङ्गात्तं कन्याविरूपाक्षाय नमः ॥ स्वस्तिवाक्य ॥ त्रकं कं वृकसु
वर्ध्निदिका सिंदूरतण्डुलसंगृह्य देवा ॥ गुरुवेषदापयत ॥ पश्चात्कन्यायै सिंदूरतवातगुणं समाग्राहयत ॥
पश्चान्निंदूरतानं कथं प्रदाययत ॥ जननमथापूर्वागमनं ॥ ॥ ॐ यं तां यमि मृदाः हाना लोकप्रसाकत्री
गृहीत्यापानिनायातिः वक्रकृत्प्रवोक्तं ॥ ॥ स्वस्तिवाक्य ॥ तदनूगुणवक्रादि उपकात्रधनिर्जातन दामयथाभक्तिं

रुडा मः समस्त रुडा सिडा मः दधनत्व सिडा मः महाविच उदा - को मधी थया ले दसिडा मः पत्र जाला सिडा मः सम
 रुडा न लोक मः जने कजित्वा देव आ य आदि नं रुडा सिडा मः मकी धा न सडा मः मु सडा मः बा क न सडा मः का घका
 व सिडा मः जी तिक सडा मः लोक स स वृद्धि या क मः रुडा र देव प्रति द्या या रुडा मः न म स्या व व हा न सिडा मः दश रु सि
 डा मः अदि वल थू डा मः डय रु कि लोक स स सं तुष्ट स न लो य नं म कडा मः धर्म न स रुडा मः थथि मः आचार्य या य बा ठ

न नी अलि ध क ला हा ॥ आचार्य स न विरू यः ॥ अ कि य छि का दि घू प्रा सा दि की ल उ दा मः दधनत्व विच उदा ॥ को मा
 सि रुः प्र स न्ना लाः सर्व स म य पा न गः ॥ सर्व णि ल्य क ज सि रुः म कु म्भ कु वि भ न दः ॥ वा न ना ज दि ल ग रु हा अ न्य थ
 लोक ग हि तः ॥ प्रति द्वा तु प्र कू बी नः य तु न्ना रु तु न तु वः ॥ सा रु द्धि वि रु य म्भ कि न्ना न्ना प ध म्भ वित्त नं ॥ अ न्ना म्भ
 पि ना व द्धा ध ना य रू व - दा यिकाः ॥ क रु वि रु स मा न आ पू न्ना तु प्र व द्ध नं ॥ पि न न स स्या नं दं ना या व र्ति रु रु न
 दे व नाः ॥ ना व द्ध ग स रु म्भ सि रु धि न स म ही य न ॥ १ ॥ श्री गुरु व रु स न्ना य न मः ॥ ॥ ॥ ॥

ध म्भ क रु ना चार्य थ य ना या हा दे व न ग थिं गुरु ल वि यी ध ल स थ थिं गुरु ल वि यी रु ली य रु मा न यां गुरु त ना उ या ध न ला र
 स र्व लो क क रु पि न्ना य रु यी लोक स रु लो क रु यी ल म्भी व न्ना पू न्ना यी ना दि वि व रु न ध न ल यी डा पि न लोक म्भ
 न रु रु यी ल म्भ ल न दे व न वा स या यी ना ध ल स स रु म्भ य ग दे व न वा स या यी डा पृ थी म्भ आ न य रु यी थ थि म्भ व रु ना

= १
 ॥ १ ॥ श्री गुरु व रु स न्ना य न मः ॥ ॥ ॥ ॥

नमः
१५

हन्वंगायिं वडाचार्य अलसा गीत वाद्य नुर्य हसिल उल अल उ न अउ न उल मलि मुरकि हल अदिनं लउ
यसिडा यथिं म्म अचार्य इली ॥ २ ॥ यथिं म्म कल उल वडाचार्य गुत्र रता उ मायमनेडा गाय अलसा काय इडा
कर्म शुद्ध का कल न कासन थ कल न ग व लाहि तु निला हा मिस क क इ म्म मनेडा हनं यथिं म्म विरूप चिग दह
हनी नमकं ॥ गीत वाद्य नुर्य रद ह हसि ज म्म य उ म्म वादि मलि म्म का वडादिना त्र ल य म्म उ दी यं न्द म्म
वडाचार्य म्म ह यत ॥ २ ॥ वृडा थ म्म म्म थ म्म का कल न स न सिका क्क वायं म्म अथिं म्म क्क वायं म्म
न खं उ का ॥ ३ ॥ विरुता भवला नो डा म्म - क्क र्किका म्म पी वा विरु कि म्म र्किका ह दे व क्क वायं म्म उ वि का ॥
॥ ४ ॥ चो क्क भव विरुता क्क न खा थ क्क म्म उ का ॥ स चि का क्किका विरुता ॥ वि का क्किका म्म थ ॥ दग्
ला ही व दा स र्व चो क्क दा ग ल ग क्क का ॥ ५ ॥ म्म र्किका थि ता वृद्धे धन य म्म दिना म्म क्क ना क्क ना हार व
कल न क्किका अहं कालि क्क थ क्क क्किका पा पि क्क ना ग हा विरुता त ल म्म ला क्क काय ल म्म थ ॥ वे य म्म च व न इ डा
क्क अल सा न क्किका क्क क्किका ह सिस म्म ठ को ख व र्क य म्म क्क क्क क्क य म्म य म्म क्क काव क्किका इ डा म्म म्म र्किका
काय म्मिका इ डा म्म काय वाम न ग ल ल द डी क्क स ह डि न डी थ थिं म्म अल उल गुत्र रता त्र या य म्म ने डा इली
॥ ५ ॥ गाय अलसा अल उल अचार्य गुत्र रता न दे व क्क वायं ना या त सा हनं दे व पूजा जादिनं तडा वन कर्म या त सा

॥ ५ ॥ यथिं म्म र्किका ॥ ५ ॥

धननाभशयूडा यतुनाभराजासनाद्वतंगदयः यतलाकसः नगकागिडा मयूरुल थथिंम आचार्यकूलकर्म्म
शोड लप्यमतेडाडुला ॥ ७ ॥ ग्वेनवृके कर्मधायस गुननं निषायत्रिआयाय गथिंहुम धालसा अदावने प्रदावं
तं कर्मया जति प्रायसिडा द्यावक अक्रोधनवीर्यवक सर्वसत्त्ववाधया क थथिंम निषायगुननालडुला ॥ ८ ॥
ग्वेनवृनिषया अलडुला गथ धालसा समकला कया कदयामेड धर्मया तदमडुला ययडा क हाने कचिदुकागत

नागकाससमाख्याना कर्तुमयं प्रदत्तथा नागसर्वान् प्रयुजीत कूलकर्म्मसर्वदा ॥ ७ ॥ वतागुननि
षायत्रिऊनीया ॥ यः पून अदावान् प्रहावान् रुपावान् क्रोधनावीर्यवान् सत्त्वानति संवाधकः ॥ ७ ॥ मं निष
गुनयुजीयात् ॥ ८ ॥ यः सत्त्वेषु दया तहिते धर्मते देवः स सत्त्वेषु विद्वेषः क हाने कचितीनामिलधुः
जतिमयेः जेमं पदु आस प्रसभी यतदाष वादिना चार्यपतिरुत ॥ ९ ॥ नागुन अथाचना ॥ १०

अतिलोहि क नागजानि नेममडु थडा न आस प्रसंसा वाक निवयानदा घन खड्गो ययडा थथिंम निषयाल नमालडु
ला ॥ १० ॥ नागुन अथाचना माह ॥ शुक्रदिन लयाडा गुनया गृहस संतात्र सामागि पूजा डोलन दयकं गुनया कडा नरे
थिस कल पूजा डोलन माल लान कलापयाय धनकाडा सयदि गुनया पादक नयमाहुं क्रिया तक्र गुनम डुल पचग
बलाधन सिद्धतन समायाय कलम पूजा देवमानक क्रिया धनकाडा निषायगुनम डुल दनक माल क कर्मया तका ॥ ११

नमः
१६

समचाहत्रं तुमाश्चतुर्गुणधाराः कृतकनसुगन्धमधुलवायः मध्याह्नः पर्वतः नीलदंडिहस्तः पृथ्वीरागः पश्चिम
संघमनागः उरुजसः मलयः आरुणः मूर्तिः श्रेष्ठसुतः तादातवायुवासः लसपूः वीभानसः कर्कटः श्वेतनवतल
वीथरुली ॥ ११ ॥ पंचापचारपूजास्तुतिः ॥ ध्यालिताः शंखलचंचलतलसंः गुत्रमापाइकासः अर्चयायइताः श्वेतलिदेगु
लिवलिदिवियः बुकपूजाः खानकिनेनः गुत्रपूजाः दंडिहस्तः कलभाहिषकः अग्निर्वादिः सखनः समयागदीनेकः ॥ १२ ॥

समचाहत्रं तुमाश्चतुर्गुणधाराः कृतकनसुगन्धमधुलवायः मध्याह्नः पर्वतः नीलदंडिहस्तः पृथ्वीरागः पश्चिम
संघमनागः उरुजसः मलयः आरुणः मूर्तिः श्रेष्ठसुतः तादातवायुवासः लसपूः वीभानसः कर्कटः श्वेतनवतल
वीथरुली ॥ ११ ॥ पंचापचारपूजास्तुतिः ॥ ध्यालिताः शंखलचंचलतलसंः गुत्रमापाइकासः अर्चयायइताः श्वेतलिदेगु
लिवलिदिवियः बुकपूजाः खानकिनेनः गुत्रपूजाः दंडिहस्तः कलभाहिषकः अग्निर्वादिः सखनः समयागदीनेकः ॥ १२ ॥

मुखलाधनः ॥ १२ ॥ वृत्तिगुत्रमधुलजः ॥ ध्यालिताः शंखलचंचलतलसंः गुत्रमापाइकासः अर्चयायइताः श्वेतलिदेगु
लिवलिदिवियः बुकपूजाः खानकिनेनः गुत्रपूजाः दंडिहस्तः कलभाहिषकः अग्निर्वादिः सखनः समयागदीनेकः ॥ १३ ॥

मनु॥ ॐ नमः शुक्राधिपमय अस्त्रास्त्रमाय शुद्धवित्रास्त्राहा॥ स्मृति॥ धातु संख भग्री तस्य देहानां पत्रमण्डलः सर्वभासु प्रवका
त्रं तर्गविं प्रधामा म्हं॥ ॥ नमः मयदलेः शितपद्मक्रीयाय त्रीलचन्दनगन्धमधुलके कानी श्रुतकृष्णदिगं वराह्यः पीतक
यामकूटभग्न अङ्गुलिखिखित्रिका धनः साङ्गनमस्त्यमाषतकः कृष्णगन्धसधूपीदयः॥ पूजा॥ कस्तुरिचन्दननमः
॥ हस्तिनयहापवीतनमः॥ हस्तिपूष्यनमः॥ मनु॥ ॐ अनिश्रुताय नीलाशयस्रकृष्णाय कृष्ण उकलाहा॥ स्मृति॥ रत्ना
ङ्गनयमि वर्धनविपूषामहाग्रहः॥ कायायागर्तसंरुतं प्रधामा मिश्रानि श्रुतं॥ ॥ नमः वायुबदलेः तकां साङ्गयतिगन्ध
मधुलके ताद्रुकापालिका ताङ्गावर्धिता अर्द्धदेहा त्रिविधतयानक गोचनरुगदङ्का कला लालकूटी कृन्तललातः पञ्चैव
वर्धमयमधगतः शुक्राणां चन्द्रसूर्य कमलातिनयस्त्रिगः अस्त्रमांसाभिषङ्गाङ्गनदेयः॥ मितकानी वापि वर्धविल्व
धूपं च पूजा॥ अङ्गुलचन्दननमः॥ कृष्णवकुलनमः॥ कृष्णपूष्यनमः॥ मनु॥ ॐ विकृताननाय त्रिविधगि वराहाहं॥ अ
नसन्निहाय अमृतप्रियाय नमः स्वाहा॥ स्मृति॥ अर्द्धकाय महावीरं चन्द्रसूर्य प्रमथनं सिंहकाय समरुतं त्वं
रुं प्रधामा म्हं॥ ॥ श्रीगानदलेः तकाय श्रीपतिपूका गन्धमधुलके चाक्षुके तावता॥ धूम्रवर्धकृन्तङ्गिलिः नाम
कृत्स्नपूक्तं च तपूतक साङ्गनमस्त्यदेयः सङ्गनसधूपं च॥ पूजा॥ विचित्रचन्दननमः॥ विचित्रयहापवी

नमः

१८

नमः कं पृष्णं नमः ॥ मनु ॥ ॐ नमः धन्यां सुवर्णं सन्निधाय क्रान्तिकं तव नमः स्वाहा ॥ स्तुति ॥ प्रलाल धूम्र संका संता त्रा गृह्णति वा
शिनः त्रिडा त्रिडा त्रिडा कं धातु के तु के तु नमो नमः ॥ ॥ वाक् पृजा ॥ यव ॥ मधुल त्रिपुर्वदा त्रा ॥ ॐ वृद्धाय वरु पृष्णं प्रति कः
स्वाहा ॥ दडि ॥ वरु पृष्णं प्रति कः स्वाहा ॥ यष्टि म ॥ ॐ जा या बली कि त्रिपुर्वदा त्रा वरु पृष्णं प्रति कः स्वाहा ॥ ३
क्रुतदा त्रा ॥ ॐ मंशु श्री कृमा त्रा वरु पृष्णं प्रति कः स्वाहा ॥ पंचा यत्रा त्रिपुर्वदा त्रा ॥ ॥ ॐ नमो गान्धका त्रा नय चन्द्रः
सूर्यशानां भव वृहस्पति शुक्रा निश्वत त्रा इ के तु जयः देवनाग यडु ग भर्वा स त्रिपुर्वदा त्रा कि न त्रिपुर्वदा त्रा त्रा
ॐ दे वलि गृह्ण २ ख ख स्वाहि २ भा किं कृ त्रिपुर्वदा त्रा ॥ ॥ धनलि देव पूजा देवता इति ॥ ॥ ही म त्रिपुर्वदा त्रा
या इ म लख संहय स्वस्ति क स सने गु त्रिपुर्वदा त्रा देव क वि स र्जन ला ह गि त्रिपुर्वदा त्रा ॥ धन सि पति ला ह मा स मा स कः
लक अ इ इ म ल प ड लि वि चान नाय हा काय धन लि पि श स म ड या ल ख न स त्री त्रिपुर्वदा त्रा न या च क भ ष ल ख
न लय धन लि ल सि धान क क भ ष ला स थ हा त्रा गु लि पंचा त्रिपुर्वदा त्रा न या य सि ड ख ला स थ ड त्रा गु पंचा त्रिपुर्वदा त्रा
धन ले प या य ह न सि ड ल ख ला स थ ड त्रा या य वृक्ष धि न स ली त्रिपुर्वदा त्रा स ले प न ह न सि ड ल ख ला स थ ड त्रा गु पंचा त्रिपुर्वदा त्रा
वल्कल न भ त्री त्रिपुर्वदा त्रा स ले प न ॥ धन लि ज न ल हा म ल न स त्रा न या य जल क य क धन लि स र्व क र्मिक क ल भ न त्रा
न या क पंचा ग धन ले प न या त क ॥ धन लि धन क द्रा पा या था सं त्रा स ग न ल य व म त्रिपुर्वदा त्रा स वृक्ष वि य व म त्रिपुर्वदा त्रा य प

किमलङ्क वियः शतलि पद्मसः काथनीयाः लत्रितः अर्धपतिपातिनं नित्यकं धनकाशः सिद्धं लयः॥ अथालिङ्गकाय
कैयपनिर्जनं लोहासालाङ्गः स्वस्तिवाक्यपत्रयाङ्गः यद्मधुन उयकं कीदृशपति निलाङ्गनः लोहाग्नितडाः लखका
लः इदं धलः थस्यं कायलहालाङ्गः यद्कलिनं वस्यं यद्कलिङ्गधनकं॥ अर्धनं लिहासायादङ्गः इङ्गाकिङ्क १ किङ्कयः क
युविमानः लज्जति १० साहाङ्गः अर्धतयस्य सतयः हासायाथासः अर्धमंगलवायः इङ्गनः अथ अर्धमंगलवायः स्वस्ति
चायाङ्गास्यः इङ्गासुदुहितयः अर्धस्वस्तिङ्कः लः विमानतयः अर्धनं लिः निलाङ्गनः लोहाग्नितडाः सग्वयः॥ अर्धनं लिः अर्ध
मंगलजायकः अर्धविन्दुः सूर्यविन्दुः ज्ञानकाङ्गः स्वस्तिवाक्ययायः हासासजायकः अर्धनं लिङ्गुः रः राउ प्ररुतिनं
बाह्यत्रहानः इङ्गा १०८ मायः अर्धङ्गाङ्गः इङ्गापयाङ्गाङ्गः कुचकः सङ्कनं लयः अर्धनं लिः चूर्ध्वलः नति १० कायाङ्गाया
लिसः अर्धविद्यायः कायः कैयपनिहाननः॥ हनकायः कैयपनिर्जनः सालाङ्गः यद्महाला स्वचाकः उयकं
कर्मजागायायः स्वस्तिवाक्यपलपाङ्गः अर्धनं लिः पंचातिषकविधिथं निष्प्राप्ति निष्प्राप्तिः॥ अर्धनं लिः अर्ध
तिविद्यः महावलिर्वियः निष्प्राधिवासनः निष्प्राप्तिः मधुलथिलः स्वानः किङ्कनं सङ्कनं पूर्वियायः
अर्धनाङ्गः आभीर्वादिः विसर्जनः सग्वनतयः चतपूजाः दङ्गिः अविद्याः कलसातीषकः थनलि विमानसथङ्ग

नमः
१२

श्रीः कायः कृपयः पतिः सनः सा लाडाः याशः यायः थयः रपतिः वलिः दानः वियः याशः धूनः काडाः थडाः केडुगिनः वलिनः पिय
लसः संडः कायः थनलिः कुमात्रिः पजाः कुमात्रियाः लघः नकुः पृजाः थनलिः तुलः मधिः धलिः दीकिः कुमालिः प्रजामः शायनिकु
वियः थयालिः डाः सावनः वियः गद्यः चक्रः थमालिः मुखः सुदः वियः ॥ ॐ तिरीमः तथः क्रियाविधिः ॥
श्रीः देवः तथः क्रियायायः पतिमानः गत्यः धलः साः वर्षदः चयः ८८ यादः मासः या ८ लाः दिः या ८ दूधः वेलः संह्याः ३
हनं श्रीः वषः संपूर्णः तथः थं देवः दलः किचः दः माखः डयाः थप्रः माद्यः गथः रुना ॥ नकः संकृतः कर्मयायः स्नानयायः यथा
जथः देवः तथः क्रियामाह ॥ श्रीः द्वाभीतिः चवर्षाः धिनाः सानिः चदिनाः निचाः देवः थमिः विख्यातः संहनः चदः दृश्यः ॥
॥ जथः वाः वसुः वर्षः समापूरुः वसुः धाः तार्चनं कृताः श्रीः होयः उलिसः माध्याः श्रीः होयः सिद्धिं च प्रार्थया ॥
विधिः थं स्नायः नायायः कलः संपूजाः रुद्रः सालाः सहितः नं सप्तः रुथः नायाः हाडाः वसुः धातामः तुलः देगुलिः कलः शः नासः
गलः शः महाकालः श्रीः वसुः धातामः पीथः प्रदुतिनः पूजाः धूनः काडाः जग्निः स्नायनः प्रथमाः रुद्रिः मधुलः पूजाः शंखलः ३
खनः हाय ॥ ॐ स्वः तु गोहायः रुद्रः वरुः श्रीः धिः स्नान ॥ ॐ भदनीः वडीः रुवः वरुः वंथः २८ ॥ ज्ञापः धूपः निलाः रुद्रः लोहा
निगडा ॥ ध्यान ॥ ॐ वं काशः त्रयोः सर्वः धिः वधुः सलिनाः सनः तलनिः धनः दानाः तलमः श्रीः लिहः स्नां वदः प्रधामप

यं के दक्षिण त्रिधा धात्रि धी सवर्ध कल धा धार्य धा न्यमर्ध लि वि चि तं प्रहायूक्त कपयं तं नव यो वस मं नं ता वय स्य नम
धनी ॥ आ पा पं षा ॥ ॐ व स धा त्रि हा ॥ ॐ व स वृ षि पा तं व स धा त्रि हा ॥ ॐ वूं वूं व स धा त्रि हा ॥ ॐ ल मी र तं त्रि वा णि
न हा ॥ ॐ व ड धन सा ग त्रि नि धा षा य त था ग ना य हा ॥ ॐ आ र्यो व लो कि तं श्रु ता य हा ॥ ॐ व ड पा धि य य ड स ना य त था
हा ॥ ॐ ॐ ला दे वी य हा ॥ ॐ रं रं न रं न डाय हा ॥ ॐ व नू ध ना ग त्रा ज्ञा य हा ॥ ॐ त्रि वि कूं ड ली य हा ॥ ॐ क लि मालि
हा ॥ ॐ मू र्ध ना य हा ॥ ॐ च त्र ना य हा ॥ ॐ गु फा दे वी य हा ॥ ॐ स त्त व ती दे वी य हा ॥ ॐ च न्द्र का ना दे
वी य हा ॥ ॐ मा धि र दा य हा ॥ ॐ पू र्ण रं दा य हा ॥ ॐ पू र्ण रं दा य हा ॥ ॐ धन ना य हा ॥ ॐ वे श्र व षा हा
॥ ॥ पं क्ति ॥ ॥ ॐ र ग व ति व स धा त्रि न मूर्ति न मा मि गा ध गु धा म नी त्र य ता त्र धी म क्त सि धि ॥ ज स म रु ध नि
धनं कां च नं त्र त्र व र्ध व डू र्ण न धन वृ षि सा ग त्रं त्र न म कू टं ॥ ॥ व लि वि य ॥ ॥ ॐ व स धा त्रि धी दा त्रि द दः ख त
य ह त्र धी ॥ ॐ दं व लि ग डू र स र्व धा न्य व स धा त्रि मां दे हि द दः प य हा ॥ दे व ता रू ति ॥ ॥ य नं लि दे व त्र य क्रि या या स
त स्य संह य स्रु ति क स स्रु न गु त्र म धु ल दे न के म धु ल व लि वि स र्ज न ॥ नि लां ड न ला हा मि त्र त्र ड स ग व न धनं
लि सि फि त स्य ला ह मा स मा ष क ल के ध नं लि डी म म ड न स्ना न या च क ॥ कं ॥ ॥ ल स त या पं चा र त नं स्ना न सि

नमः
२०

लसलासगया पर्व गयनस्नान पर्व विन लोपन पंचवल्कलनलेपन अर्च हामो सर्वकर्मिक कलभ पंचगंधन
स्नान थनलिथससं तथाडी सगुनविय सिद्धलस्य ॥ थनलि लाहामसालाडी स्वस्तिवा कपदपं यद्ममलुल उयक
कनपति निलाडन लाहागितडा लं खधाले इदधालयसं ताथलहाले यंकलिन गवस्यं यंकलिन धूनको ॥ थ
नलि हासायादडाडुडाकिडू लडिडु तथाडी लूतति १० तथाडी स्वस्ति कवीयाडी विमानसतय अष्टमंगल वायडी
हन थाडा अष्टमंगल वाय विमानया डडी स दुदि थापना चंडविम्व सूर्यविम्व ठनकाडी स्वस्ति वा पलपाडी अ
ष्टमंगल वाय क ॥ थनलि गुत्रराउ प्रहतिनं बाहलस्नान को १० तथाय अष्टम १० तथाय डाडी कुचक सिद्धनल
य थनलि लूतति १० तथाडी पालिस अर्घयाय कायकुय पतिशनं ॥ थन धूनकाडी काय कुय पतिशन ठडाडी
यद्ममलुल उयक लचाक स्वस्तिवा कपद पाडी थनलि पंचाति वकविधिथं निष्य प्रातडा डिषा कति थनपूरु
वाय मडावल्लि गत्रपडा दीकुसा स्नान नन सगवनम्य कलभारिषक आगिवादे ॥ थनलि विमानसथडा
डी जायायाय थय २ पमिं यलिविय याडा धूनकाडी थडी के डुडी ठ लखसासं रुयाडी केससगवनविय ॥ थन
लि कुमालि पडा कुमालि यासिं डननमिय ७ लमविदान धलि वडिदान कुमानिसडी पनिसुदिय थन

धूनकाडा समय गद्यचक्रधर्मांगलि॥ ॥ ॐ मिद वनय क्रिया विधि॥ ॥ अथ महात्रय क्रिया विधि॥ ॥ वनपूत्र
 वनमाहात्रयया प्रमाद्यः वर्षगुयर्मुदमासगुलादिगुलदयाडा हलकिडी निभल १२०० च इमाखडाडा गथ
 अलसा द्वादशचक्रवर्तिसमस्तमानुषयासुष्टु अष्टपूत्रवया उरुमश्लो॥ अथ पतिमाहा क्रिया विधि॥ न कसमा
 लकथयनायाडाडा क्रियात्रय गुमसुलदेगुलियाय कलसनास अत्रिष्टपन प्रथमाकृति हनाकृति उ श्रीषावि
 यामसुलपूजा अंखलखनहाय॥ ॥ ॐ खद्युताहृदहृदावडनंथिया॥ ॐ मदनीवडीरववडवधरहं॥ आपधपनी
 अथ महात्रय क्रिया विधि॥ नवनवतिवर्षसिमा लानिचदि नानिचामिहात्रय निविख्याता द्वादशचक्रवर्ति
 रवन्॥ द्वादशचक्रवर्त्यचभनायपूत्रधारुमः सर्वेषां प्राप्तेरतानिभतायुखल्यमानूत॥ ॥ ॥

लोहनलोहमित्रता॥ यनध्यानरावना॥ तना अक्षत्रचक्रमध्यप्रकृतिगर्हादिश्रीषायरावनपर्यन्तं विज्ञायाः॥
 अ. पा. पू. न्या॥ ॐ प्रकृतिमहाश्रीषायस्वाहा॥ ॐ ग. ग. धा श्रीषायस्वाहा॥ ॐ अतिमहाहृदिश्रीषायस्वाहा॥ ॐ महिग
 र्हाश्रीषायस्वाहा॥ ॐ अगर्हादिश्रीषायस्वाहा॥ ॐ अमिगर्हाश्रीषायस्वाहा॥ ॐ तनागर्हादिश्रीषायस्वाहा॥ ॐ इह
 हीम श्रीषायस्वाहा॥ ॐ ॥ यं पू. मृति॥ ॐ उ श्रीषधननिरासागगहातिगर्हायामधिनशानितंते इह इहिमुन

नमः श्रीकृष्णाय ॥ वलिविय ॥ प्रकृतिगर्हादयो प्रीषादीनां गुरुदं वलिगुरु २ खख स्वाहि २ ॥ किमत्रांकगुरुं आहं कुरुणा ॥
 २१ यनदेवपूजा ॥ देवताकृति ॥ यनलिमहात्रयं क्रियायाडा कलसासं हयाडी ॥ त्यक्तिकसत्तन ॥ गुरुमधुल ॥ मिलोडन ॥
 लीहातिगडा ॥ सग्वनं चसं नय ॥ चयवमुदिय कृत्वा ॥ यनलि क्रापायाथ ॥ मासकेलेकेलीह मास ॥ पिडीसमद
 लं खनलान ॥ कंस खलासपंचामन ॥ नयाडी ॥ सिद्धलखलास ॥ पंचगव ॥ पंचीषधि

आभा मरुकाथि
 2665
 1000 PAGES